P3478-5

हरीया आब निर्धक्क भ' कें भोट देन

लरायणपुरा गामक हरीया एक दिन बजार जाइतकाल ओत परतीपर बडका भीड देखलक। उ सोचलक "औ बा, मेला लागल छै की ?"

अपने गामक मास्टरकें देखि उ पूछलक "मास्टर साहेब ! ई कथिकें भीड छिऐ।"

मास्टर कहलकिन्ह "आइं ! आब एक महिनाबाद भोट हेतैक से पत्ता नहिं छह ? १८ वर्ष पुगल सभ भोट खसा सकैत अछि। तैं भोट मांग बा क लेल नेता भाषण द रहल छथि।"

मास्टर कहलकिन्ह - "चलू हरीया दादा हम हुं सभ भाषण सूनी।"

हरीया और मास्टर दुनु चौरमें बैसकें भाषण सुनअ लागल । नेता भाषण करैत छलाह- "हम अहांसभक भलाई हुअवाला काज करब । हमरा भोट ढकें जीताऊ ।"

हरीया बाजल - "सभक भलाई हुअवाला काज करब कहैत अघि लेकिन केओ नहिं करैत अघि ।"

माष्टर कलकिन्ह - "साँचे भलाई करैबला आदमी त अपने से छुटियाबअ पडत । चुनावक समयमे मीठा बजले और नीक भाषण करले पर कहाँ हएत ।"

घर अबैत बाटमें हरीया मास्टरसें पूछलक- "वास्तवमे चुनावमे भोट खसाकें की फाइदा हेतैक ?"

मास्टर मुस्कुराइत कहलकिन्ह- "हसरासभक बडका संघर्षकवाद प्रजातन्त्र आयल अछि । भोट खसायब हमार अधिकार छी । इएहसें असल काज करैवाला आदमी कें जीताकें संसदमे पठाओल जा सकैत अछि । असल विचार और बुद्धिवाला सरकार बनलापर हमरासभक गाम-घर और देशक विकसक काज नीक जंका हेतैक । तैं भोट त खसबैक चाही । ककरा भोट देबह से अपने विचार करह ।"

साँझमे घर लौटलापर- "ककरा भोट दी। फेर अपन पंसदक आदमीकें भोट देब नहि पाएव सेहो नहि छैक" कहैत हरीयाकें बड सोच लागि गेलैक।

हरीयाक घरबाली मुनिया घरवालकें चिन्तामे डुबल पिढीयापर बैठल देखिकें पुछलक- "अएंऐ किएक असगरे घोकरियाकें बैसल छी, बजारमें पैसा हरा देलीयैक की ?"

हरीया बाजल- "फेर चुनाव नजदिके लगे आएब गेल अछि, केनाकें भोट देब से सोचि रहल छी ?"

मुनिया तुरंत बाजि उठल- "भोट खसबैकें कोनो काम नहिं। पोरसाल अपन जान जाय लागल से बिसैर गेलिऐक ?"

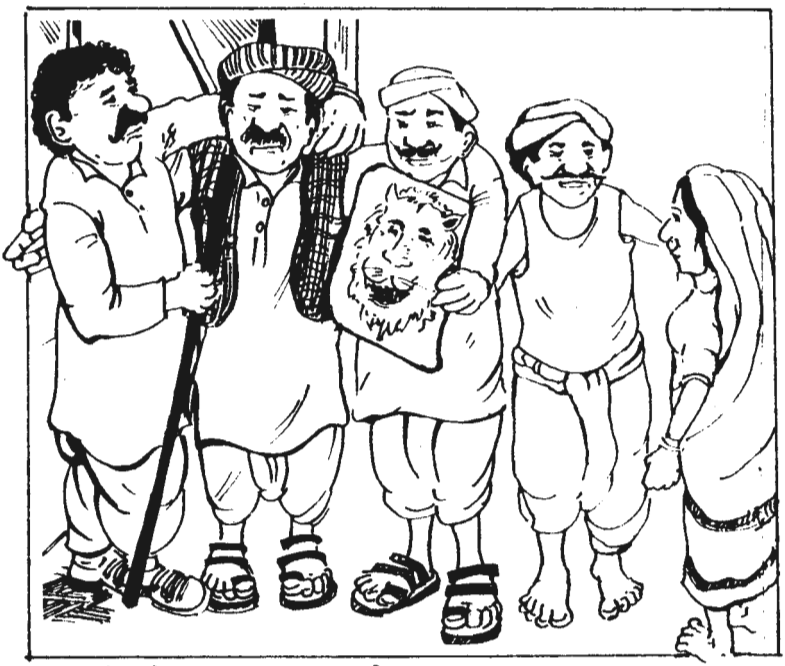

हरीयाकें पोरसालक बात मोन पड लागल ।

एक दिन हरीया घरमें बैसल छल । तखने बहरा अंगनासं कोनो आदमी बजौलक से सुनलक- "हरीया, बहरा आबि जो ।" बाहैर आबिकें देखलक जे जमीन्दारक लोगसभ लाठी लएकें आएल छुल ।

लठैतसभ बोलल- "ले चल जमीन्दारके भोट दैलए । इ त सूनिकें बैसल अछि ।

हरीया डरायल बाजल "हम त नहिं जेबै मालिक !"

लठैतसभ ओकरा घिसियाबअ लागल । बहरा हल्ला सूनिकें मुनिया बहरायल ।

लठैतसभ बाजल "मुनियो भोट दैलए चल ।"

घरबलाकें घिसियाबैतल जायत देखिके ओहो पाछु-पाछु लागल ।

बाटमे हरीया और मुनिया फुसफुसायत बात करअ लागल । "मुनिया ! मतदान केन्द्रमे भोट खसबैत केओ नहिं देखत । गोप्य रहत । तैं ई दुष्ट जमीन्दारके भोट नहिं दकें दोसरे आदमीके ददेबै ।"

ई सुनिकें मुनियो सांस फेरलक । मतदान केन्द्रपर पुगलापर गाम और लोगसभक संग हरीया और मुनिया से हो लाइन लागल ।

हरीया सोचलक- "जमीन्दारक सिंह छापमें भुलियाकें छाप नहिं लगाएब ।"

लाइन लागिके आगू पुगलापर हरीया देखलकजे ओहि ठाम दोसरेबात छलै । मतपत्र लेबाक ठाम, भोट खसैबाक ठाम चारो भर जमीन्दारक लठैतसभ कब्जा जमाकें बैसल छल । हरीयाक पारी अएलापर ठाढ मेल लठैत मतपत्र लएकें जमीन्दारक सिंह चिन्हमें छाप लगा देलक । डरसँ, हरीया चुप्प रहैत जल्दीसें बाकसमे भोट खसा देलक । मुनियो तहिने भोट खसौलक ।

सब गामबाला तहिने भोट खसौलक ।

हरीया दिक्क भ गेल । "इएह छिऐ गोप्य मतदान । अपनाकें दुख देव, पसीन नहिं पडैवाला आदमीकें उल्टे भोट दकें जितायब ।"

हरीया पहुलका बात मन पडलैक । एक बेर भोट खसवैलय जायत हरीयाकें जान जाय लागलै । सब गामक लोग सभ भोट खसैबाकलेल लाइनमे बैठल छलै । ठाम-ठाम पर जमीन्दार लठैत सभ छलै । उसभ गामक लोगसभकें जमीन्दारक सिंह चिन्हमें छाप लगबे लेल कहलक । किन्तु गामक लोगसभ जमीन्दारक पक्षमे भोट देबै लए तयार नहिं छलै ।

लठैतसभ भोट खसवै लए आएत सभके जमीन्दारक सिंह चिन्ह देखवैत चलि गे लैं ।

लेकिन सभ गामक लोग बाजिल- "हमसभ अपन पसीन भेल उम्मेदबार याकें भोट देबै । तोरे सभक कहलाएपर नहिं हेतौह ।"

गामक लोकसभ जमीन्दारके भोट नहिं देत से बात बूझिकें लठैत सभ "बम फुटलै" कहिकें हल्ला उठौलकै। गामक लोकसभ ई सूनिकें भगाभाग भेलै। मतदान केन्द्रसे सभ भागि गेलापर लठैतसभ सभक मतपत्र जमीन्दारक सिंह चिन्हमे छाप लगाकें भोट खसा देलकै। ताहि वेर हरीया और मुनिया सेहो भोट खसौनाई छोडिकें जान बचबैलल भागल छल।

ओएह धाँधली कके खसाओल झुठा भोटसँ जमीन्दार चुनाव जीत गेल। गामक लोक दिक्क भए गेल।

पहुलका बात मोन पडलापर हरीयाके एओ बेर भोट खसबैलए ईच्छा नहिं भेल । उ रातिभरी चुनावक डरसे नीकजंका सुति नहि सकल । दोसर दिन हरीया मास्टरक घरमे सल्लाह करैकलेल गेल ।

हरीया कहलक- "नमस्कार मास्टर साहेव ।"

मास्टरो कहलकिन्ह- "नमस्कार हरीया भाई ! बैसू ने । हाल-साल की छै ?"

हरीया जबाब देलक- "मास्टर साहेव ! हमरा त चुनाव सुनिकें बड डर लगैत अछि । जानो जोगेनाई मुस्किल भ जाइत अछि ।"

मास्टर बाजलथि- "हरीया भाई ! पहुलका बात मोन पाडिकें एहि बेरक चुनाबमे डरवाक नहिं चाही । आब प्रजातन्त्र आबि गेल अछि । निर्धक्क भएकें भोट खसैवाक चाही ।"

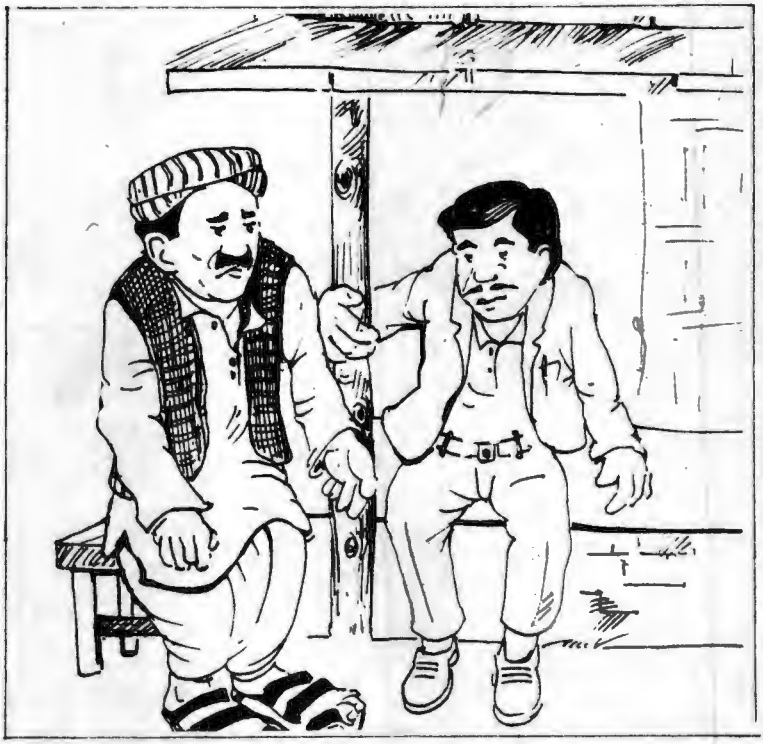

मास्टर बात बुझावैत कहलकिन्ह- "प्रजातन्त्रमे सब बेर एकेटा आदमी तिजबाक चाहि से नहिं छैक । जनताकें पसिन भेल आदमी सेहै चुनाव जीत सकैत अछि । कर-काप, डर देखौलापर ओकरे भोट नहि देबाक चाहि ।"

हरीया कहलक- "केना नहिं डराउ, मास्टर साहेव ? लठैतसभ डरबैत अछि, बम फुटलै से हल्ला ककें भगबैत अछि । आब की करु ?

मास्टर कहलकिन्ह- "हम गामक लोसभकें अखनेसँ संगठित भएकें एहि बातपर विचार करबाक चाही ।

हरीया विचारलक- "एही बात पर जल्दीए सभ गामक लोगसभसँ छलफल करबाक चाही ।"

एक दिन चुनाव विषयमे सल्लाह-मसबीरा करैलय हरीया घुर तपै काल बहुत गौंवासभकें बोलौलक । आगि तपैत लोकसभ बात करय लागल ।

हरीया कहलक- "हमरासभ अपन मनपसन्देक बिना डराइत भोट देबाक चाही ।"

यहीपर मास्टर कहलकिन्ह- "मतदान केन्द्रमे भोट खसबैलय गेलापर लठैतसभ डर देखलेमे ओकरासभ कहलहा आदमीके भोट नहिं देबाक चाही । हमरासभ मिलिके ओकरासभके भगेबाक चाही । बुझलिऐक ? भोट देनाई हमर इच्छा छी । अपन मनपसन्द आदमीकें निर्धक्क भकें भोट देबाक चाही ।"

सभ गौवासभ बाजल- "एहि बेर हमसभ नहिं डरायब । अपन मनपसन्द आदमीके हमसभ भोट देबै ।"

हरीया आ मुनिया भोठ खसवैलय मतदान केन्द्रपर गेल । एहो बेर लठैत सभ आबिके "जमीन्दारके भोट दही" कह लागल ।

हरीया कहलक- "लठैतसभक बात नहिं मानैक चाही । ले, एकटाके पकरअ चाही ।"

गौंवासभ मिलके जमीन्दारक लठैतसभके बकैरके डोरीसँ बाँधलक । लठैतसभके चुनावमे गडबडी केलक से आरोपपर पुलिस पकैरके लगेल । लोगसभ निर्धक्क भ गेल ।

लठैतसभके पकैरके लगेलापर हरीया, मुनिया आ गौंवासभ खसबैलय लाइनमे लागल ।

सभ खुशी भके अपन मनपसीन उम्मेदबारके भोट देलक ।

हरीया कहलक- "अहा ! प्रजातन्त्रक चुनाव केहेन बढियाँ ।

"निर्धक्क भ' के अपन मताधिकारक प्रयोग करु ?"

शब्द तथा अवधारणाः
नविन प्याकुर्याल

चित्रः नगेन्द्र पोडयाल तथा
ज्ञानेश्वर उदय

प्रकाशक
अनौपचारिक क्षेत्र अध्ययन केन्द्र (इन्सेक)
कालिमाटी, काठमाडौं

Digitized By: Bimal Chandra Sharma